Khane Ki Paanch Sunnaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 225
Weekly Booklet : 225

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" की
एक क़िस्त बनाम

खाने की पांच सुन्नतें

सफ़हात 20

खड़े हो कर खाना कैसा ? 08
ख़्वाब के ज़रीए घोड़ी का तोहफ़ा 14
कहीं आप बीच से तो खाना नहीं खाते ? 16
डरावने ख़्वाबों से नजात का वज़ीफ़ा 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **खाने की पांच सुन्नतें**
सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर **1443** हि., नवम्बर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

खाने की पांच सुन्नतें

येह रिसाला (**खाने की पांच सुन्नतें**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" सफ़हा 220 ता 242 से लिया गया है।

खाने की पांच सुन्नतें

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला "**खाने की पांच सुन्नतें**" पढ़ या सुन ले, उसे खाने पीने सोने जागने वग़ैरा हर काम सुन्नत के मुत़ाबिक़ करने की तौफ़ीक़ दे और उस को मरते वक़्त अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब फ़रमा कर बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स सुब्हो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच कर रहेगी। (الترغیب والترہیب، 1/261، حدیث:29)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बैठने की एक सुन्नत

खाना खाने के लिये बैठने की एक सुन्नत येह है कि सीधा घुटना खड़ा करें और उलटा पाउं बिछा कर उस पर बैठ जाएं। जब कि एक और भी सुन्नत बैठने की है। चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को छुहारे तनावुल फ़रमाते देखा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीन से लग कर इस त़रह़ बैठे थे कि दोनों घुटने खड़े थे।

(مسلم، ص1130، حدیث:2044)

घुटने खड़े कर के खाने के फ़वाइद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दोनों घुटने खड़े कर के ज़मीन से सुरीन लगा कर खाने से ब क़दरे ज़रूरत ही खाना मे'दे में जाता है जिस के सबब अमराज़ से हिफ़ाज़त होती है। एक पाउं खड़ा कर के और दूसरा बिछा कर खाने की सुन्नत की बरकत से **तिल्ली की बीमारियों** से बचाव होता है और रानों के पठ्ठे मज़बूत होते हैं। कहते हैं, चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर खाने के आ़दी का **मोटापा** बढ़ता और तोंद निकल आती है। नीज़ चार ज़ानू खाने से दर्दे कूलन्ज (बड़ी आंत का दर्द) हो जाने का भी ख़त़रा रहता है। एक आदमी का कहना है, "मैं ने एक **इंग्रेज़** को देखा कि दोनों घुटने खड़े कर के ज़मीन पर सुरीन लगा कर खा रहा था, मैं ने ह़ैरत से इस का सबब पूछा, तो फ़ौरन अपने निकले हुए पेट पर हाथ मार कर कहने लगा, "इस को अन्दर करने के लिये।"

खाना और पर्दे में पर्दा

खाने में सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठने वाले इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि घुटनों से ले कर पाउं के पन्जों तक चादर से अच्छी त़रह़ **पर्दे में पर्दा** कर ले। अगर कुरते का दामन बड़ा हो तो उसी को अच्छी त़रह़ फैला कर **पर्दे में पर्दा** कर लीजिये। पर्दे में पर्दा न करने से सामने बैठे हुए लोगों के लिये बा'ज़ अवक़ात आंखों की हिफ़ाज़त बहुत मुश्किल हो जाती है। अकेले में भी पर्दे में पर्दा करना चाहिये कि **अल्लाह** पाक से **ह़या** करने का सब से ज़ियादा ह़क़ है। **अल्लाह** पाक से ह़या कर रहा हूं येह निय्यत कर लेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم इस का कसीर सवाब पाएंगे और दूसरों की मौजूदगी में **पर्दे में पर्दा** करते वक़्त येह निय्यत भी की जा सकती है कि मुसल्मानों के लिये बद निगाही का सबब दूर कर रहा हूं।" हर काम में जिस क़दर हो सके अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं, जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उसी

क़दर सवाब भी ज़ियादा मिलेगा। **अल्लाह** पाक के प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है, **''मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''** (معجم کبیر، 6/185، حدیث:5942)

टेबल कुर्सी पर खाना

आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, ''जूता पहने खाना अगर इस उ़ज़्र से हो कि ज़मीन पर बैठा है और फ़र्श (या'नी दरी वग़ैरा) नहीं जब तो सिर्फ़ एक सुन्नते मुस्तह़ब्बा का तर्क है। इस के लिये बेहतर येही था कि जूता उतार लेता और मेज़ पर खाना (रखा हुवा) है और येह कुर्सी पर जूता पहने तो वज़्अ़ ख़ास नसारा की है। इस से दूर भागे और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ या'नी ''जो किसी क़ौम से मुशाबहत पैदा करे वोह उन्हीं में से है।'' (ابوداود، 4/62، حدیث:4031)

शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल हमारे यहां तक़रीबन हर मुआ़मले में यहूदो नसारा की नक़्ल की जाती है। शादी यक़ीनन मीठी मीठी सुन्नत है मगर अफ़्सोस कि इस अ़ज़ीम सुन्नत की अदाएगी में दीगर मुक़द्दस सुन्नतों बल्कि मुतअ़द्दद फ़राइज़ तक का ख़ून कर दिया जाता है ! गाने बाजे, फ़िल्में, डिरामे, वेराइटी प्रोगाम और न जाने क्या क्या धमा चोकड़ियां होती हैं, घर की औ़रतें ख़ूब ढोल पीटती हैं, مَعَاذَ اللهِ ثُمَّ مَعَاذَ اللهِ रक़्स भी करती हैं आख़िर कौन सा ह़राम काम ऐसा है जो आजकल हमारे यहां शादियों में नहीं किया जाता ? مَعَاذَ اللهِ दूल्हा शादी से क़ब्ल ही अपनी मंगेतर को अपने हाथ से अंगूठी पहनाता है, साथ सैरो तफ़रीह़ होती है, शादी में बे ह़याई से भरपूर तक़ारीब मुन्अ़क़िद होती हैं। औ़रतों में

अजनबी मर्द मूवीज़ बनाते हैं। खाने की दा'वत भी तो मेज़ कुर्सी पर, बल्कि अब तो ज़ियादा "तरक़्क़ी" होने लगी है कि कुर्सियां भी हटा ली गई हैं सिर्फ़ मेज़ पर अन्वाओ अक़्साम के खाने चुन दिये जाते हैं और लोग चलते फिरते मेज़ के गिर्द घूमते हुए खाते पीते हैं, ह़ालां कि ऐसा करना हरगिज़ सुन्नत नहीं। आप ग़ौर तो फ़रमाइये कि आज "शादी खाना आबादी होती किस की है?" शादी के बा'द उ़मूमन हर कोई "खाना बरबादी" का शिकार नज़र आ रहा है! कहीं ऐसा तो नहीं कि शादी जैसी पाकीज़ा और मीठी मीठी सुन्नत में ग़ैर शर्ई रुसूमात की दुन्या ही में सज़ा दी जा रही हो! अगर **अल्लाह** पाक ग़ज़बनाक हुवा तो आख़िरत की सज़ा किस क़दर हौलनाक होगी!! **अल्लाह** करीम हमें फ़िरंगी तहज़ीब व फ़ैशन से नजात अ़ता फ़रमा कर सुन्नतों का आईनादार बनाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के **दीनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللہ बरकतें और सआ़दतें ही सआ़दतें पाएंगे। चुनान्चे

वोह दा'वते इस्लामी में कैसे आया?

एक इस्लामी भाई 2002 ई. में बुरे दोस्तों की सोह़बत के बाइ़स **ग़ुन्डा गेंग** में शामिल हो गए। लोगों को मारना पीटना और गालियां बकना उन का मा'मूल था, जानबूझ कर झगड़े मोल लेते, जो नया फ़ैशन आता सब से पहले वोह अपनाते, दिन में कई बार कपड़े तब्दील करते सिवाए जीन्ज़ (jeans) के दूसरी पैन्ट न पहनते, आवारा दोस्तों के साथ घूम फिर कर रात गए घर लौटते और दिन चढ़े तक सोते रहते। वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो चुका था, बेवा मां समझाती तो مَعَاذَاللہ ज़बान दराज़ी करते थे। एक मरतबा

दा'वते इस्लामी के किसी बा इमामा इस्लामी भाई ने उन से मुलाक़ात पर एक रिसाला **जिन्नात का बादशाह** तोहफ़े में दिया, उन्हों ने पढ़ा तो अच्छा लगा। रमज़ानुल मुबारक में एक दिन किसी मस्जिद में उन्हें जाने की सआ़दत मिली तो इत्तिफ़ाक़ से एक सब्ज़ सब्ज़ इमामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस सन्जीदा नौ जवान पर नज़र पड़ी मा'लूम हुवा कि येह यहां मो'तकिफ़ हैं। उस इस्लामी भाई ने **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** दिया तो वोह भी बैठ गए। बा'दे दर्स उन्हों ने उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए **दा'वते इस्लामी** के दीनी माहोल की बरकतें बताईं। इस्लामी भाई का लिबास इस क़दर सादा था कि बा'ज़ जगह पैवन्द तक लगे हुए थे, जब उन के लिये घर से खाना आया तो वोह भी बिल्कुल सादा था ! येह उन की **सादगी** से बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हुवे और उन से मुलाक़ात के लिये आने जाने लगे। इत्तिफ़ाक़ से ईदुल फ़ित्र के बा'द उन इस्लामी भाई का निकाह था। येह बेचारे ग़रीब व तंगदस्त थे मगर हैरत की बात येह थी कि उन्हों ने इस बात का उन्हें ज़रा भी एहसास नहीं होने दिया और न ही किसी क़िस्म की माली इमदाद के लिये सुवाल किया। मैं और ज़ियादा मुतअस्सिर हुवा कि مَاشَآءَاللّٰه दा'वते इस्लामी का **दीनी माहोल** कितना प्यारा है और इस के वाबस्तगान किस क़दर सादा और ख़ुद्दार हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी की महब्बत उन के दिल में घर करती चली गई हत्ता कि उन्हों ने **आशिक़ाने रसूल** के हमराह 8 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। उन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, क़ल्ब में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और उन्हों ने गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अपनी ज़ात को **दा'वते इस्लामी** के हवाले कर दिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه उन पर वोह मदनी रंग चढ़ा कि ता दमे तहरीर अ़लाक़ाई मुशावरत के **ख़ादिम** (निगरान) की हैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के दीनी कामों की धूमें मचा रहे है।

सादगी चाहिये आ़जिज़ी चाहिये आप को गर चलें क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब ख़ुद्दारियां और ख़ुश अख़्लाक़ियां आइये सीख लें क़ाफ़िलों में चलो
आ़शिक़ाने रसूल लाए सुन्नत के फूल आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने, दीन की तब्लीग़ के लिये इस्त्री किया हुवा, भड़कीला लिबास और कलफ़ दार ख़ूब सूरत इ़मामा ही ज़रूरी नहीं, पैवन्द दार लिबास, सादा इ़मामा शरीफ़ से भी काम चलता है....चलता ही नहीं दौड़ता है....बल्कि दौड़ता ही नहीं इस को तो मदनी पर लग जाते हैं और सूए मदीनए मुनव्वरह उड़ने लगता है ! सादा लिबास के तो क्या कहने !

सादा लिबास की फ़ज़ीलत

कुफ़्फ़ार की नक़्क़ाली में फ़ैशन करने वाले, हर वक़्त बने संवरे रहने वाले, नित नए डीज़ाइन और त़रह़ त़रह़ की तराश ख़राश वाले लिबास पहनने वाले अगर **सादगी** अपना लें तो दोनों जहां में बेड़ा पार हो । चुनान्चे **सादा लिबास** पहनने की फ़ज़ीलत पढ़िये और झूमिये :

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो बा वुजूदे क़ुदरत अच्छे कपड़े पहनना, तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ देगा **अल्लाह** पाक उस को करामत का हुल्ला (या'नी जन्नती लिबास) पहनाएगा। (ابوداود، 4/326، حدیث:4778)

फ़ैशन परस्तो ! ख़बरदार !!

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! झूम जाओ ! पास दौलत है, उ़म्दा लिबास पहनने की त़ाक़त है फिर भी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रिज़ा की ख़ात़िर आ़जिज़ी इख़्तियार करते हुए सादा लिबास पहनने वाला जन्नती लिबास पाएगा और ज़ाहिर है जो जन्नती लिबास पाएगा वोह यक़ीनी त़ौर पर

जन्नत में भी जाएगा। लोगों पर रो'ब डालने, अमीराना ठाठ पालने और महूज़ अपने नफ़्स के लिये लोगों को मुतअस्सिर करने की ख़ातिर नुमायां, फ़ैन्सी और भड़कीले लिबास पहनने वाले पढ़ें और कुढ़ें :

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या में जिस ने शोहरत का लिबास पहना, क़ियामत के दिन **अल्लाह** उस को ज़िल्लत का लिबास पहनाएगा।" (ابنِ ماجہ، 4/163، حدیث:3606)

लिबासे शोहरत किसे कहते हैं ?

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं, या'नी ऐसा लिबास पहने कि लोग अमीर (या'नी मालदार) जानें या ऐसा लिबास पहने कि जिस से लोग नेक परहेज़ गार समझें येह दोनों क़िस्म के लिबास, शोहरत के लिबास हैं। अल ग़रज़ जिस लिबास में निय्यत येह हो कि लोग उस की इ़ज़्ज़त करें येह उस का लिबासे शोहरत है। साह़िबे मिरक़ात رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया, मस्ख़रा पन का लिबास पहनना जिस से लोग हंसें येह भी लिबासे शोहरत है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/109)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सख़्त इम्तिह़ान है, लिबास पहनने में बहुत ग़ौर करने और दिखावे से बचने की सख़्त ज़रूरत है नीज़ जो लोगों को अपनी सादगी का मो'तक़िद बनाने के लिये सादा लिबास व इ़मामा व चादर वग़ैरा अपनाता है वोह रियाकार और जहन्नम का ह़क़दार है। हम **अल्लाह** करीम से इख़्लास की भीक मांगते हैं।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वास्ते हो — कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही
रियाकारियों से सियाह कारियों से — बचा या इलाही बचा या इलाही

टिपटॉप करने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिया

फ़ैशन की ख़ातिर रोज़ रोज़ नए लिबास पहनने वाले, ज़रा फ़ैशन तब्दील हुवा या लिबास थोड़ा पुराना हुवा या कहीं से मा'मूली सा फटा तो **पैवन्द कारी** कर के उस को पहनने में आ़र (या'नी ऐ़ब) महसूस करने वाले इस रिवायत को बार बार पढ़ें : **अबू** उमामा इयास बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम सुनते नहीं ? क्या तुम सुनते नहीं ? कि कपड़े का पुराना होना ईमान से है, बेशक कपड़े का पुराना होना ईमान से है। (ابوداود، 4/102، حدیث:4161) इस रिवायत के तह़्त ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ज़ीनत का तर्क करना अहले ईमान के अख़्लाक़ (या'नी उ़म्दा आ़दात) से है।'' (اشعۃ اللمعات، 3/585)

पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़म्र बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ की गई, आप अपनी क़मीज़ में **पैवन्द** क्यूं लगाते हैं ? फ़रमाया, इस से दिल **नर्म** रहता है और मोमिन इस की पैरवी करता है। (यानी मोमिन का दिल नर्म ही होना चाहिये) (حلیۃ الاولیاء، 1/124، رقم:254)

खड़े हो कर खाना कैसा ?

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं, ''नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **खड़े** हो कर पीने और **खड़े** हो कर खाने से मन्अ़ फ़रमाया है।'' (مجمع الزوائد، 5/23، حدیث:7921)

खड़े हो कर खाने के त़िब्बी नुक़्सानात

इटली के एक माहिरे अ़ि़ज़या (या'नी ग़िज़ाओ के माहिर) डॉक्टर का कहना है, ''खड़े हो कर खाना खाने से **तिल्ली** और **दिल** की बीमारियां नीज़

नफ़्सियाती अमराज़ पैदा होते हैं यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान ऐसा **पागल** हो जाता है कि अपनों तक को पहचान नहीं पाता।''

सीधे हाथ से खाएं पियें

सीधे हाथ से खाना पीना सुन्नत है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और पानी पिये तो सीधे हाथ से पिये। (مسلم، ص1117، حدیث:2174)

शैत़ान का त़रीक़ा

ह़ज़रते अबदुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कोई शख़्स न **उल्टे हाथ** से खाना खाए न पिये कि **उल्टे हाथ** से खाना पीना शैत़ान का त़रीक़ा है।'' (مسلم، ص1117، حدیث:2174)

सीधे ही हाथ से लें और दें

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''तुम में से हर एक **सीधे हाथ** से खाए और सीधे हाथ से पिये और सीधे हाथ से ले और सीधे हाथ से दे क्यूं कि शैत़ान उल्टे हाथ से खाता और उल्टे हाथ से पीता उल्टे हाथ से देता और उल्टे हाथ से लेता है।'' (ابن ماجہ، 4/12، حدیث:3266)

हर काम में उल्टा हाथ क्यूं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! आजकल हम दुन्या के चक्कर में इस क़दर घिर चुके हैं कि मह़बूबे बारी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों की त़रफ़ हमारी तवज्जोह ही नहीं रहती। **याद रखिये !** ह़दीसे मुबारक में है कि आदमी की रगों में शैत़ान ख़ून के साथ तैरता है।

(مسلم، ص1197، حدیث:2174) ज़ाहिर है कि येह हमें सुन्नतों की त़रफ़ कहां जाने देगा ? अगर्चे सीधे हाथ से ही खाना खाते हैं लेकिन फिर भी **उल्टे हाथ** से कुछ दाने फांक ही लिये जाते हैं, खाते हुए चूंकि सीधा हाथ आलूदा होता है लिहाज़ा पानी **उल्टे** ही हाथ से पी डालते हैं, चाय पीते वक़्त कप सीधे हाथ में और रिकाबी **उल्टे** हाथ में लिये चाय पीते हैं, किसी को पानी पिलाते वक़्त जग सीधे हाथ में होता है जब कि गिलास **उल्टे** में और **उल्टे** हाथ से गिलास दूसरों को देते हैं। ''ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म'' सफ़ह़ा 374 पर है, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, ''लेने और देने में दाएं (या'नी सीधे) हाथ को इस्ति'माल करो, येह आ़दत ऐसी पुख़्ता हो जाए कि कल क़ियामत में नामए आ'माल पेश हो तो इसी आ़दत के मुवाफ़िक़ दायां (या'नी सीधा) हाथ आगे बढ़ जाए तब तो काम बन जाएगा।''

प्यारे इस्लामी भाइयो ! होश कीजिये और देखिये हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उल्टे हाथ से खाना पीना किस क़दर ना पसन्द है। चुनान्चे

तेरा सीधा हाथ कभी न उठे !

ह़ज़रते सलमा बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है कि एक आदमी ने **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने उल्टे हाथ से खाना खाया तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''सीधे हाथ से खाओ।'' उस ने कहा, मैं सीधे हाथ से नहीं खा सकता। (ग़ैब जानने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समझ गए कि येह तकब्बुर से बोल रहा है चुनान्चे) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''لَا اسْتَطَعْتَ या'नी तुझे इस्तित़ाअ़त न हो !'' (मत़लब येह कि तेरा सीधा हाथ कभी न उठे) उस ने तकब्बुर की वज्ह से सीधे हाथ से खाना खाने से इन्कार किया

था लिहाज़ा फिर उस का सीधा हाथ कभी मुंह की तरफ़ न उठ सका। (या'नी उस का सीधा हाथ बेकार हो गया) (مسلم، ص1118، حدیث:2021)

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 302)

तेरा चेहरा बिगड़ जाए

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने सदाक़त निशान की येह शान है कि जो कुछ फ़रमाते वोह हो जाता। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रुत्बा तो बहुत अ़ज़ीम है, ग़ुलामों का हाल मुलाहज़ा हो, चुनान्चे एक औ़रत मश्हूर सहाबी हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को झांका करती थी, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने बारहा उस को मन्अ़ किया मगर वोह बाज़ न आई। एक दिन उस ने जब हस्बे मा'मूल झांका तो आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ज़बाने करामत निशान से येह अल्फ़ाज़ निकले شَاهَ وَجْهُكِ या'नी **"तेरा चेहरा बिगड़ जाए।"** पस उसी वक़्त उस का चेहरा गुद्दी की तरफ़ फिर गया।

(जामेए करामाते औलिया, 1/112)

महफ़ूज़ शहा रखना सदा बे अदबों से और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ज़बाने क़बूलिय्यत निशान की येह तासीर दर अस्ल महरे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ का समरा था। जैसा कि जामेए तिरमिज़ी वग़ैरा में है, प्यारे प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे रब्बुल उ़ला में दुआ की, اَللّٰهُمَّ اسْتَجِبْ سَعْدًا اِذَا دَعَاكَ या'नी **"या अल्लाह !** जब भी सा'द तुझ से दुआ करे तू क़बूल फ़रमा लिया कर।" (ترمذی، 5/418، حدیث:3772) मुहद्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं, "हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जब भी दुआ करते क़बूल हो जाती।"

(जामेए करामाते औलिया, 1/139)

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की भी बड़ी शान है, गुलामाने सहाबा या'नी औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم भी बड़ी अ़ज़मतों के मालिक होते हैं चुनान्चे

या अल्लाह ! सबाह़ी को अन्धा कर दे !

ज़बर दस्त आ़लिम व मुह़द्दिस ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक लाख ह़दीसों के ह़ाफ़िज़ थे, मिस्र के ह़ाकिम उ़ब्बाद बिन मुह़म्मद ने उन्हें क़ाज़ी बनाना चाहा तो ओ़ह्दए क़ज़ा से बचने के लिये कहीं रूपोश हो गए। एक ह़ासिद "सबाही" ने झूटी चुग़ली खाते हुए ह़ाकिम से कहा, "अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब ने ख़ुद मुझ से क़ाज़ी बनने की ह़िर्स ज़ाहिर की थी मगर अब आप की क़स्दन ना फ़रमानी करते हुए ग़ाइब हो गए हैं।" ह़ाकिम ने ग़ुस्से में आ कर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मकाने आ़लीशान को मुन्हदिम करवा दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जलाल में आ कर बारगाहे रब्बे जुल जलाल में अ़र्ज़ कर दी, **या इलाही ! "सबाही" को अन्धा कर दे।** चुनान्चे आठवें दिन वोह "सबाही" अन्धा हो गया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा रहता था। एक बार ज़िक्रे क़ियामत सुन कर दहशत त़ारी हो गई और बेहोश हो गए। होश में आने के बा'द सिर्फ़ चन्द रोज़ ज़िन्दा रहे और इस दौरान कुछ भी न बोले। 197 हि. में वफ़ात पाई। (تذکرۃ الحفاظ، 1/223)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

औलिया का जो कोई हो बे अदब नाज़िल उस पे होता है क़हरो ग़ज़ब

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमें अपने प्यारे ह़बीब शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का सच्चा अदब नसीब फ़रमा, इन की बे अदबी और इन के बे अदबों के शर से सदा मह़फ़ूज़ रख। और अपने प्यारे ह़बीब का सच्चा दीवाना बना। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

या रब मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम दीवाना शहन्शाहे मदीना का बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

साह़िबे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में बुज़ुर्गों का बहुत अदब किया जाता है, बल्कि सच्ची बात येह है कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़नायत से दा'वते इस्लामी **फ़ैज़ाने औलिया** ही की बदौलत चल रही है। चुनान्चे **आ़शिक़ाने रसूल** का एक मदनी क़ाफ़िला सुन्नतों की बहारें लुटाता हुवा एक मक़ाम ''अन्वार शरीफ़'' वारिद हुवा, वहां से **हाथों हाथ** चार इस्लामी भाई तीन दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ शरीक हुए, इन चारों में ''अन्वार शरीफ़'' के **साह़िबे मज़ार** बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ख़ानवादे के एक फ़रज़न्द भी थे। मदनी क़ाफ़िला नेकी की दा'वत की धूमें मचाता हुवा एक दूसरे अ़लाके में पहुंचा। जब अन्वार शरीफ़ वालों के तीन दिन मुकम्मल हो गए तो साह़िबे मज़ार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के रिश्तेदार ने कहा, मैं तो वापस नहीं जाऊंगा क्यूं कि आज रात मैं ने अपने ''ह़ज़रत'' رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे थे, ''बेटा ! पलट कर घर न जाना मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ मज़ीद आगे सफ़र जारी रखना।''

साहि़बे मज़ार رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **की इन्फ़िरादी कोशिश** का येह वाक़िआ़ सुन कर मदनी क़ाफ़िले में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, सब के हौ़सलों को मदीने के 12 चांद लग गए और **अन्वार शरीफ़** से आए हुए चारों इस्लामी भाई हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर चल पड़े ।

देते हैं फ़ैज़ आ़म औलियाए किराम लूटने सब चलें क़ाफ़िले में चलो
औलिया का करम तुम पे हो ला जरम मिल के सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़्वाब के ज़रीए़ घोड़ी का तोह़फ़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी वलिय्युल्लाह का बा'दे वफ़ात ख़्वाब में रहनुमाई करना कोई **अचम्बे** की बात नहीं, **अल्लाह** के नेक बन्दे ब अ़त़ाए रब्बुल उ़ला बहुत कुछ कर सकते हैं चुनान्चे ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किरमानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं, सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, कि ग़ियास पूर के क़ियाम से पहले मैं एक कोस (या'नी तक़रीबन तीन किलो मीटर दूर) कीलूखरी की मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ पढ़ने जाया करता था । एक बार इसी त़रह़ नमाज़े जुमुआ़ के लिये पैदल जा रहा था गर्म हवाएं चल रही थीं और मैं रोज़े से था, मुझे चक्कर आने लगे और मैं एक दुकान पर बैठ गया । मेरे दिल में ख़याल गुज़रा कि अगर मेरे पास सुवारी होती तो सहूलत रहती । बा'द में शैख़ सा'दी का येह शे'र मेरी ज़बान पर आया,

مَا قَدَمْ اَز سَر کُنِیْم دَر طَلَبِ دوستاں   رَاہ بجائے بَرَد ہر کہ بَاَقْدَامْ رَفْت

(हम दोस्तों की त़लब में सर को पाउं बना कर चलते हैं, क्यूं कि जो कोई इस राह में क़दमों से चलता है वोह आगे नहीं बढ़ पाता)

मैं ने दिल में आने वाले सुवारी के ख़याल से तौबा की। इस वाक़िए को तीन रोज़ गुज़रे थे कि "ख़लीफ़ा मलिक यार परां" मेरे लिये एक **घोड़ी** ले कर आए और कहने लगे, मैं मुसल्सल तीन रातों से ख़्वाब में देख रहा हूं कि मेरे शैख़ मुझ से फ़रमा रहे हैं, "फ़ुलां साहिब को **घोड़ी** दे आओ।" लिहाज़ा **घोड़ी** हाज़िर है क़बूल फ़रमा लीजिये। मैं ने कहा, बेशक आप के शैख़ ने आप से फ़रमाया होगा लेकिन जब तक मेरे शैख़ मुझ से नहीं फ़रमाएंगे मैं येह **घोड़ी** नहीं लूंगा। उसी रात मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रते शैख़ फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मुझ से फ़रमाते हैं कि मलिक यार परां की दिलजूई के लिये वोह **घोड़ी** क़बूल कर लो। दूसरे रोज़ वोह **घोड़ी** ले कर आया तो मैं ने उसे अ़त़िय्याए ख़ुदावन्दी समझते हुए क़बूल कर लिया।

(सियरुल औलिया, स. 246)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सिर्फ़ अपनी जानिब से खाइये

एक बरतन में जब एक ही त़रह़ का खाना हो, तो अपनी त़रफ़ से खाना सुन्नत है। चुनान्चे हज़रते उ़मर बिन अबी सलमा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं बच्चा था और ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की परवरिश में था। (येह उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के वोह फ़रज़न्द थे जो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निकाह़ में आने से पहले साबिक़ा शौहर से थे) खाते वक़्त बरतन में हर त़रफ़ हाथ डाल देता। ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**बिस्मिल्लाह** पढ़ो और सीधे हाथ से खाओ और बरतन की उस जानिब से खाओ जो तुम्हारे क़रीब है।" (بخاری، 3/521، حدیث:5376)

बीच में से मत खाइये

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है, रसूले अ़ज़ीम, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "बेशक बरकत खाने के **दरमियानी** हिस्से में उतरती है पस तुम कनारों से खाना खाओ और दरमियान से न खाओ।" (ترمذی، 3/316، حدیث:1812)

आप कहीं बीच से तो खाना नहीं खाते !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि इस सुन्नत पर आप अ़मल करते हैं या नहीं ? मेरा बारहा का मुशाहदा है कि बा अ़मल नज़र आने वालों की भी अक्सरिय्यत इस सुन्नत पर अ़मल करने से महरूम है ! जिस को देखो वोह खाने की रिकाबी या सालन के बरतन वग़ैरा के बीच ही से आग़ाज़ करता है, न जाने क्यूं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि बरकत से महरूम करने के लिये शैत़ान हाथ पकड़ कर बीच में डाल देता हो ! ह़क़ीक़त येही है कि शैत़ान इस बात की कोशिश में लगा रहता है कि मुसल्मान भलाइयों से महरूम रहें। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं, "खाने के बरतन के बीच में **अल्लाह** पाक की रह़मत नाज़िल होती है, बीच से खाना हिर्स की अ़लामत है, ह़रीस रह़मते इलाही से महरूम है।" इस ह़दीसे मुबारक से मा'लूम होता है कि मुसल्मानों के खाने के वक़्त भी रह़मते बारी का नुज़ूल होता है ख़ास कर जब कि सुन्नत की निय्यत से खाया जाए।

(मिरआतुल मनाजीह़ 6/33, 34)

दूसरों को शरमिन्दगी से बचाइये

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "जब दस्तर ख़्वान

लगे तो हर शख़्स अपने क़रीब से खाए और अपने साथ खाने वालों के आगे से न खाए और रिकाबी के दरमियान से न खाए क्यूं कि बरकत उसी त़रफ़ से आती है और कोई भी दस्तर ख़्वान उठाए जाने से पहले न उठे और न ही अपना हाथ रोके जब तक सब लोग अपना हाथ न रोक लें अगर्चे सैर हो चुका हो और लोगों के साथ लगा रहे क्यूं कि इस का रुक जाना बाक़ी लोगों की शरमिन्दगी का बाइ़स होगा और वोह अपना हाथ रोक लेंगे ह़ालां कि शायद उन्हें अभी और खाने की ह़ाजत हो।''

(شعب الایمان، 5/83، حدیث:5864)

बीच में बरकत की वज़ाह़त

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, बरतन के कनारों से अपने अपने आगे से खाओ, बीच में से मत खाओ कि बरतन के बीच में **बरकत** उतरती है वहां से कनारों तक पहुंचती है। अगर तुम ने बीच में से खाना शुरूअ़ कर दिया तो कहीं ऐसा न हो कि वहां **बरकत** आना बन्द हो जाए। ग़रज़े कि बरकत उतरने की जगह और है और **बरकत** लेने की जगह कुछ और। (मिरआतल मनाजीह़, 6/ 63)

खाने की पांच सुन्नतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पेश कर्दा ह़दीसे मुबारक में खाने की पांच सुन्नतें बयान की गई हैं : ﴾1﴿ अपने आगे से खाए ﴾2﴿ कोई साथ खा रहा हो उस के आगे से न खाए ﴾3﴿ रिकाबी के दरमियान से न खाए ﴾4﴿ पहले दस्तर ख़्वान उठाया जाए इस के बा'द खाने वाले उठें। (अफ़्सोस ! आजकल उ़मूमन उल्टा अन्दाज़ है या'नी पहले खाने वाले उठते हैं इस के बा'द दस्तर ख़्वान उठाया जाता है) ﴾5﴿ दूसरे भी खाने में शामिल हों तो उस वक़्त तक हाथ

न रोके जब तक सारे फ़ारिग़ न हो जाएं। अफ़्सोस ! कि खाने की बयान कर्दा इन सुन्नतों पर अ़मल करने वाले अब नज़र ही नहीं आते। सुन्नतें सीखने और अ़वामुन्नास की मौजूदगी में सुन्नतों पर अ़मल की झिजक उड़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और वहां इन सुन्नतों की बा क़ाइदा मश्क़ कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से सुन्नतों पर अ़मल करना बहुत आसान हो जाएगा।

डरावने ख़्वाबों से नजात

मदनी क़ाफ़िलों की बरकतों के तो क्या कहने ! एक इस्लामी भाई को बेहद **डरावने ख़्वाब** आया करते थे। उन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मदनी क़ाफ़िले की बरकत से **डरावने ख़्वाब** आने बन्द हो गए, उन्हें ख़्वाब में मीठे मदीने की ज़ियारत हुई और अब ख़्वाबों में कभी अपने आप को नमाज़ में मश्ग़ूल पाते हैं तो कभी तिलावत में।

ख़्वाब में डर लगे बोझ दिल पर लगे ख़ूब जल्वे मिले क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! يَامُتَكَبِّرُ 21 बार अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ सोते वक़्त पढ़ लेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم डरावने ख़्वाब नहीं आएंगे।

बीच में से मत खाइये

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक बरकत खाने के दरमियानी हिस्से में उतरती है पस तुम कनारों से खाओ और दरमियान से न खाओ।"

(ترمذی، 3/316، حدیث:1812)